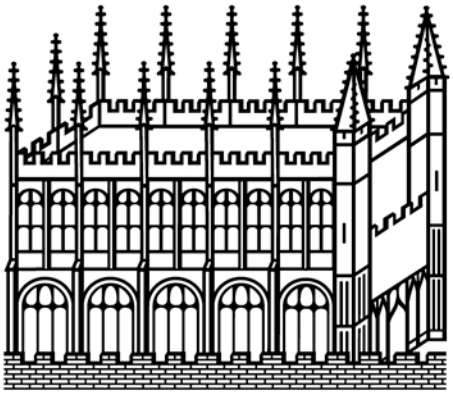

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.D.76 Hindi Lak 1

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

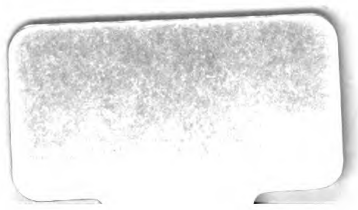

Sāṅgīta Prahlād

Sangeet Prahlad

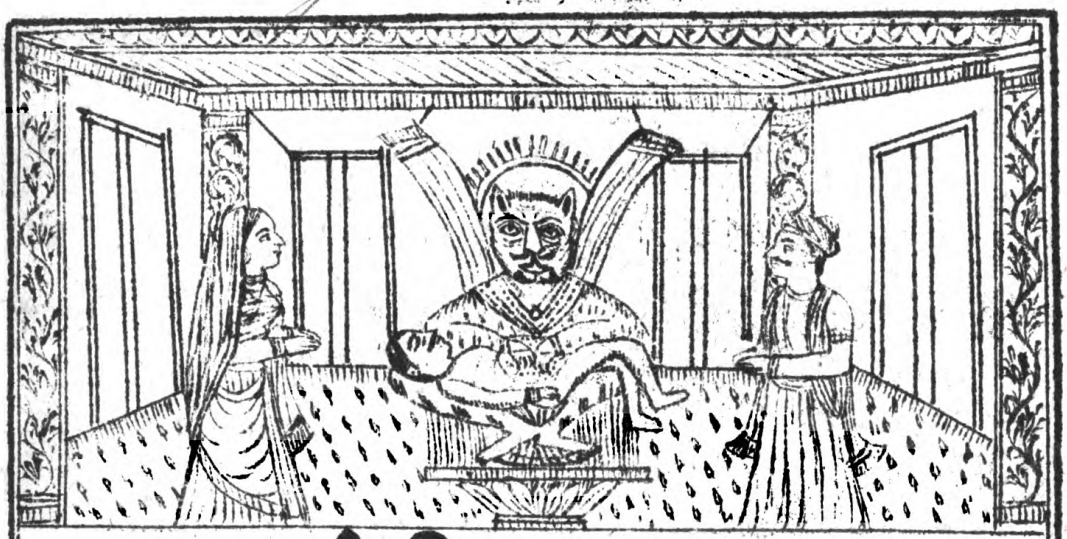

सांगीत प्रह्लाद

سانگیت پرہلاد

लक्ष्मण सिंह विरचित

जिस में

मौल्लानिक दैत्याधिप हिरण्यकशिप्वात्मज श्री मद्राम पदाब्ज सेवक सेवारि कुलावतंस भक्तजन शिरोभूषण प्रह्लादजी का पिताकी

आज्ञानुसार

नाना प्रकार के कष्ट से मुक्त होना व सर्व व्यापी श्रीरामचन्द्र का स्तम्भ में नृसिंह रूप से प्रकट होना इत्यादिक अनन्य भक्त के प्रेम वश श्री महाराजरामचन्द्र के अतिललित उत्तम चरित्रदेशाक भाषा के चौबोले छन्दों में वर्णित है

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में पहिली बार छापागया

दिसम्बर सन् १८८१ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथ प्रह्लादसांगीत लक्ष्मण कृत

लिख्यते

दोहा परिडत वेद विचारते सो देवी केसरबा
नगरकोट बैकुराठमें बैठी आसन मार

माताजी बैठी आसन मार तुहीं मेरी ज्वालारानी॥ हरि यलपी-पल हार तेरे लौकड़ अगवानी॥ माताजी ब्रह्मा बाँचे वेद पढ़ें परिडत सुरज्ञानी॥ लक्ष्मण कहे बनाय कला तेरी जगमेंजानी१

दोहा मातु सरस्वति तू बड़ी गणपति को करयाद
एकदिना खेलन चले बेलड़का प्रह्लाद॥

प्रभुजी ते लड़का प्रह्लाद कुँवर कुम्हारी घर आये॥ तहां बैठी ही सँभारि देखि मनमें मुसकाये॥ प्यारेजी लीन्ही कुम्हरी बोल बचन हँसके समझाये॥ क्यों बैठी संभारि भेद हमने नहिं पाये२॥

कुम्हारी का बचन प्रह्लाद से

दोहा हाथ जोड़ अर्जी करे बोली बचन सम्हार।
याके सुत अगनी चढ़े राम बचावनहार॥

प्यारेजी राम बचावन हार रहे जाको लख चौरासी॥ राजा रंक फ़कीर रटे योगी संन्यासी॥ प्यारेजी वा बिन दूजा कौन नाम जिनका अविनाशी॥ सुमरण से दुख जाय काट दई यमकी फाँसी॥३॥

प्रह्लाद का बचन कुम्हारीसे

दोहा चुपकी होकर तुम रहो राम नाम ना लेय।
जो सुन पावैंगे पिता तो जलावतन करदेय

कुम्हारीजी जलावतन करदेय आज तोकूं रवैंच मगावै॥ रोंच भरे भुसरवाल तुरत जो अगिनि लगावै॥ कुल्हाड़ी इक छत जिनका राज देशमें हुक्म चलावै॥ जाको ले तू नाम वही कहु कौन कहावै४॥

कुम्हारी का बचन प्रह्लादजीसे

दोहा पैदाकर पालन करै करै जगत व्यवहारा॥
अलख पुरुष कोइ ना लखै जाकी ज्योति अपार

प्यारेजी जाकी ज्योति अपार रची जिन जगमें माया॥ पानी ते नरदेह रची जिन कंचन काया॥ प्यारेजी सब घट रहे बिराजपार जिनका नहिं पाया॥ वोही राम रहगया काल ने सबको खाया ५॥

प्रह्लाद का बचन कुम्हारीसे

दोहा क्योंडोले झख मारता कहूं बचन समझ ॥
अगन चढ़े ये ना बचै तुरत भसम होजाय॥

कुम्हारीरी तुरत भसम होजाय बचेंगे नाहिं बचाये॥ तोहि चढ़े। अपराध जीवते अगिनि चढ़ाये॥ कुम्हारीरी क्या इनकी बुन्याद नाम बच्चे कहलाये॥ ये बचने के नाहें कालने निकट बुलाये ६॥

कुम्हारीका बचन प्रह्लादसे

दोहा आदि शक्ति अवतार है सब उनको समरथ्य
अगिनि चढ़े बचि जायंगे जो राम नाम है सत्य

प्यारेजी राम नाम है सत्य करैं सोई बनि आवै॥ तीन लोक के नाथ पार जिनका नहिं पावै॥ प्यारेजी अद्भुत मायारचै आप नरदेह बनावै॥ सब उनके इख़्तयार बेद जो ऐसे गावै॥ ७॥

प्रहलाद जीका बचन कुम्हारीसे

दोहा मेरे पिता के राजा की कौन करैगा होड़
मन चाहै मारै जिसे मन चाहै दे छोड़॥

प्यारेजी मन चाहे दे छोड़ हुआ मैं जिनके ह्यां भारे॥ मेरे पिता की जग नाहीं कोई ओट न हारे॥ प्यारेजी भय मानैं सब देव गगन भय मानैं तारे॥ कौन तुम्हारा राम देश उनके कहीं न्यारे॥ ८॥

कुम्हारी का बचन प्रह्लादजीसे



दोहा कितने राजा होगये करके अपना जोर।
हाथ पसारे वो गये जिनके लाख करोर

प्यारेजी जिनके लाख करोर फ़ौजके चढ़े हैं रिसाले॥ लरजेहैं आकाश खम्भ धरतीके हाले॥ प्यारेजी इक छत करते राज टरैंना रणासे टाले॥ कालबली सब डसे राम रहगये निराले॥ ९॥

प्रह्लादजीका वचन कुम्हारी से

दोहा राजपिता का चक्र मैं तोकूं ना कुछ सूझ
जो सुन पावैंगे पिता तौ मारेंगे बिनबूझ

प्यारीजी मारेंगे बिनबूझ काल तेरे शिरपर खेले॥ मेरे पिताका तेज नाहिं कोइ जगमें झेले॥ प्यारीजी गण दैयत अरु देव। नहीं छीड़ी बन बेले॥ जो तू चाहै खैर ज़बां तू मुखमें देले॥ १०॥

कुम्हारी का वचन प्रह्लाद से

दोहा मेरी जात गरीब है अरु ना मेरी पुर शीश
अंतराम सबसे बड़ा कहती विश्वे बीश

प्यारेजी कहती विश्वे बीश रामकी करो बड़ाई ॥ संतन के प्रतिपाल दुष्ट के हैं दुखदाई ॥ प्यारेजी जिनको दर्शन देत तिन्होंकी सुफल कमाई ॥ जिनहरि सुमिरे नाहिं जगत में नहिं गत पाई ११॥

दोहा हम जावैं दरबार में कहूं बचन समुझाय
जा दिन उतरे गो अवा लीजो हमैं बुलाय

प्यारी जी लीजो हमैं बुलाय भरै तू हरकी सारवी ॥ देखें तेरा राम अगिनि सेकैसे राखी ॥ कुम्हरीरी बच्चे जो बच जांय द्रब्य तोहि देहुं बुलाके ॥ जो बचने के नाहिं खाल तेरी देहुं उड़ाके ॥ १२॥

कुम्हारी बुलाने गई प्रह्लादजी को आवाँ तैयार भयो

दोहा अवाँ पका दिन तीन में लइ हरि ने फ़रियाद
चली कुम्हारी बोलने बोलत है प्रह्लाद

प्रभुजी बोलत है प्रह्लाद ढूंढ़ती व्हांको आई ॥ संग चलो महाराज कुंवर तोहि बोलन आई ॥ राजाजी सुध लीन्हीं महाराज रामकी करो बड़ाई ॥ रतन भण्डार है लाल देख प्रह्लाद रिझाई ॥१३॥

प्रह्लाद का बचन कुम्हारी से

दोहा अबतू अवाँ उतार ले जो तेरे मनमें सत्त
अगिनि चढ़े जो ना बचे तौ मारूंगा अलबत्त

कुम्हारीरी मारूंगा अलबत्त हमैं तू क्या समझावै ॥ लीजै रतन उतार खड़ी क्यों बात बनावै ॥ प्यारीजी मेरे पिताका राज देशमें हुक्म चलावै ॥ जिनका लेहै नाम रामवो कौन कहावै ॥ १४॥

कुम्हारी की परमेश्वर से बिनय

दोहा लज्जा तेरे हाथ है सुनो गरीब नेवाज ॥
बिपति बिडारन दुखहरण सारन सबके काज

प्रभुजी सारन सबके काज बिपति है हमको भारी॥ खड़े कुँवर प्रहलाद राखले लाज हमारी॥ लीन्हे रतन उतार भई दिलमाहिं करारी॥ बच्चे पीवैं दूध जहां बैठी महतारी॥ १५॥ प्रहलाद कहैं कुम्हारीसे

दोहा बो माता मेरी पापकी तु मेरी सतकी माय।
चलो हमारे महलको दूंगा द्रब्य अघाय

माताजी दूंगा द्रब्य अघाय कहूं मैं सतकी बानी॥ गुणभूलूँगो नाहिं पढ़ाई राम कहानी॥ भले दिये उपदेश मेरे हिरदय ने जानी॥ बिषप्याले छुँड़वाय प्याय दिये अमृत पानी १६॥

कुम्हारी का बचन प्रह्लाद जी से



दोहा तुम राजा महाराज हो सुनो हमारी बात।
दान द्रब्य तेरा दिया मैं खाती दिन रात

राजाजी खाती हूं दिनरात शरणमैं गही तुम्हारी॥ तेरा पिता सुन लेय करै मेरी जगख्वारी॥ तुम जावो दरबार बात मैं कहत बिचारी॥ लज्जा तेरे हाथ सुनो यह अर्ज हमारी १७॥ प्रह्लाद कहें कुम्हारीसे॥

दोहा मनमें चिन्ता मत करो कहूं बचन समझाय
जो कुछ देना होयगा सो दूंगा घर पहुंचाय

(माताजी)

माताजी दूंगा घर पहुंचाय कुँवरये बचन सुनाये॥ राम राम कह चले आपने महलों आये॥ रानीजी बैठी राज कुँवार दूरसे शीश नवाये॥ रामराम मेरी लेय तेरे हम सुत कहलाये॥१८॥

माता का बचन प्रहलाद से राग सोहनी॥

किस्से सुनी तैने राम कहानी नाम पिताका त्यागरे॥ एक दिन जन्म लियो सारे महलन भयेहैं बत्तीसो रागरे॥१॥ रहमस्हस कर मंगल गाये आज लगावत दागरे॥ भजन भाव में प्रीत लगावत ऐसी पड़ीहै लागरे॥ राजतपै चहुं देश तिहारो रारवो पिताकी पागरे॥ पिता कोप सुन होय तिहारो हमको देगा दुहागरे॥ ऐसा पुत्र जन्म के पछताई महल उड़ये कागरे॥ लक्ष्मरा शोच करे दिल अंदर अपने २ भागरे॥ सो भोगत संसार जगत में जीवै सो खेले फागरे१९जवाब प्रहलाद का राग सोहनी॥ हरदम हरि का नाम पियारा और झूँठा सब ठाठरे॥ जाको शेष महेश रटत। हैं ऐसे दीनदयालरे॥ राक्षस मार गरद कर डारे संतन के प्रतिपालरे॥ अपस्वारथ की जगजाने है ऐसी जगकी चालरे॥ कपटी कुटिल भये मन सूरख देख बिरानो मालरे॥ भवसागर की धारकठिन है भजन सेत उतरे पारे॥ सरा में पार उतरगये सोई जो साहब के लालरे॥ अस्रत छाड़ ज़हर को पीवैं तिनको कौन हवालरे॥ लक्ष्मरा शोच समझके चलिये शिरपै गूंजत कालरे२०॥ज॰मा॰प्रहलाद से

दोहा राम नाम किस्से सुना कौन मिलातोहि दूत
हमको सत्य बतायदे सुन रजवंशी मेरे पूत

प्यारेजी सुन रजवंशी मेरे पूत मेरे प्रहलाद पियारे॥ राम नाम मत लेय बचन तू मान हमारे॥ तेरा पिता सुन लेइ देय सुझे देश निकारे॥ मार उड़ावे खाल नहीं कोइ बर्जन हारे२१॥ बचन प्रहलाद का माता से

दोहा राम नाम जबसे सुना कटी सकल यम व्याध

किरण खिली जैसे स्वर्ग उजारी ॥ रानीजी हम तेरे भरतार नारि तु
म हमको प्यारी ॥ क्यों तेरा चित्त उदास शोच क्या तुमको भारी ३०॥

रानीका बचन राजासे

दोहा हाथ जोरि अर्जी करै वो पति भर्ता नार।
राज तुम्हारा देशमें जानतहै संसार

राजाजी जानतहै संसार हिये में ज्ञान उपावो ॥ तुम घरहै प्रह्ला-
द राजकी रीति सिखावो ॥ राजाजी पण्डित लेहु बुलाय कुँवर।
चट शाल बिठावो ॥ दिन दिन स्याने होंय फेर पाछे पछतावो ॥३१॥

राजाका बचन पटरानी से

दोहा तू तिरिया भूली फिरै बैठ रहो दिलसाद
पढ़ने लायक है नहीं बालक है प्रह्लाद

रानीजी बालक है प्रह्लाद कुंवर अबही है यानो ॥ क्या मानेगा।
सीख पढ़न को नाहो स्यानो ॥ रानीजी हम राजा महाराज बजै मे-
रे नौबत खानो ॥ पुत्तर मेरे चार नाहक में झगड़ो ठानो ॥३२॥

रानीका बचन राजासे

दोहा तुम राजा महाराज हो सब राजों शिरमौर
ये तेरा प्रह्लादजी कहै और की और

राजा जी कहै और की और मेरी अज्ञा नहिं मानी ॥ बर्जरही दिन
रात बनो डोलै सैलानी ॥ राजाजी पुत्र हैं तेरे चार बड़े योधा अभि-
मानी ॥ यह बेटा प्रहलाद करेगा बहुत बिरानी ॥ ३३॥

जवाब राजाजी को रानीसे

दोहा भोर सवेरा होनही कहूं बचन समझाय
घरका पण्डित बोलके दूँगा कुँवर बिठाय

रानीजी दूँगा कुँवर बिठाय तेरा जो हुक्म बजावै ॥ बैठी भोगो राज
शोच मन में मत लावै ॥ रानीजी कुलाचार्य्य गुरुदेव बहुत इन।

को समझावे॥तुमक्यों करो अँदेशातेराजी क्यों घबरावे॥३५॥

रानीका बचन राजासे

दोहा मैंपतिभरता नारिहूं तुम मेरे भरतार॥
हिजपर कुँवरपढाइये शुभघड़ीलेहु बिचार

राजाजी शुभघड़ी लेहु बिचार कुंवर बालाहै मेरा॥कर कंचनकेदान तेरेघर माल घनेरा॥ राजाजी घरका परिडतबोलजवी होइजायस बेरा॥ ऐसीविद्यादेहु हुक्मतो मानै तेरा॥३५॥

राजाकाबचन परिडतजीसे

दोहा भोरभये राजाउठे जा बैठो दर बार॥
शुक्राचार्य्यबुलायके कहतेबचनसम्हार

राजाजी कहते बचन सम्हार कुंवर चटशाल बिठावो॥बालक है प्रह्लाद बहुत इसको समझावो॥ पांड़ेजी मेरे कुलकीरीति समझी इनको सिखलावो॥दूंगा द्रव्य अघाय तलब घरबैठे पावो॥३६॥

पाँड़ेजीकाबचन राजासे

दोहा लेजाऊं चटशालमे बालक है प्रह्लाद
लाऊं कुंवरपढ़ायके तो नालेहोफ़रियाद

राजाजी नाकरहोफ़रियाद कुंवरचट शाल पठाऊं॥जोतेरे कुलकी चाल सभी इनको समझाऊं॥ राजाजी तू मेरा यजमान तेरा मैं बिप्रकहाऊं॥ पढ़केहोय तैयार तलब घरबैठे पाऊं॥३७॥

जवाब राजाका पांड़ेजीसे

दोहा जादिन कुंवरपढ़ायके लावोगे दर बार
रथघोड़ा अरु पालकी दूंगा अधिक सिंगार

पांड़ेजी दूंगा अधिक सिंगार करै मत शोच विचारी॥लेजावो चट शाल कुंवरहै प्यारा तुम्हारी॥ पांड़ेजी हमतेरे यजमान तेज मेरा है भारी॥हीरा मोती लालदरब की भरीहै बखारी॥३८॥

पांड़ेजीका बचन प्रह्लाद से

दोहा शुक्राचारजयों कहैं तू मेरी रख लाज
आमेरे ढिग बैठ जा तू कक्के पढ़ महाराज

कक्के पढ़ महाराज बचन तू मान हमारे ॥ हिरणाकुश के पुत्र फिरे। क्यों मन के मारे ॥ प्यारेजी कक्के चाहे खैर ज़रा मेरे आगे आरे ॥ दूंगा। बहुत पढ़ाय मेरे प्रह्लाद पियारे ॥३९॥ प्रह्लाद का बचन पांड़ेजी से॥

दोहा हाथ जोड़ अर्जी करै कहै बचन शिर नाय।
तुम पण्डित बुंन्याद के तो कक्के देहो पढ़ाय

पांड़ेजी कक्के देहो पढ़ाय हुक्म तेरा मैं मानूं॥ घट में बोले रामहर॰ फ़ दूजा नहिं जानूं॥ खरवे खेद मत करो नहीं तौ झगड़ा ठानूं॥ सुख में दुखड़ा देह तेरे मैं जी की जानूं॥४०॥ पांड़ेजी का ब॰ प्रह्लाद से

सुख में दुखड़ा है नहीं कहना मेरा मान
तुम राजा के कुँवर हो याते देहौं ज्ञान॥



भैयारे दूंगा आगेका ज्ञान फिरे क्यों हुआ दिवानों॥ नामपिताका लेहु खैरजो आपनि मानों॥ भैयारे घध्या घरका राज देख क्यों भ॰ येदिवानों॥ इकछत तेरा राज बजेहै नौबतखानो॥४१॥ प्र॰ ब॰ पां॰

दोहा दूषगिडत झूलो फिरै कहै औरकी और
बिना नाम श्री रामके ना कहिं दीखै ठौर
पांड़ेजी ना कहिं दीखे ठौर हमें ढ ज्ञान बतावै॥ अलख रूपओं॰ कार जिन्होंका पार न पावै॥ पांड़े जी घध्या घरका राज छोड़ जंग॰ ल को जावै॥ जगझूला संसार नाहक में भरम गवांवै॥ ४२॥

पांड़ेजीका जवाब प्रहलादसे

दोहा असुर पनेको जानदे एक बात सुन लेय
राज तुम्हारा देशमें क्यों न न्हापन लेय।
प्यारेजी क्यों नन्हापन लेय कहा तुमको बनि आई॥ चार चक्रमें राज पिताकी फिरे दुहाई॥ भैयारे ऐसो चातुर बने करै क्यों लोग हँसाई॥ कुलको आवै लाज राम की करो बड़ाई॥ ४३॥

प्रहलाद का बचन पांड़ेजीसे

दोहा न्हापन से काम क्या बोलो बचन सम्हार
मेरे तो वह एक है राम नाम आधार॥
गुरुजी राम नाम आधार सदा हितके अधिकारी॥ सारवी म॰ रे पुराणा वेद कहैं तत्वविचारी॥ पांड़ेजी ऐसे चातुर बने गई कहां अकल तुम्हारी॥ जिनको रटैं महेश तासुकी सुरति बि॰ सारी॥ ४४॥

पांड़े का बचन प्रहलादसे

छछछे छीकत हीं चले आये मेरे द्वार
जज्जे जुगति विचारिकै बेतैं दूंगा मार
भैयारे बेतैं दूंगा मार बदन की खाल उड़ाऊं॥ नेक नरा रबूं मोह

हुक्म राजाका पाऊं ॥ भैयारे क्यों नन्हापन देह रोज तुमको समझाऊं ॥ झुर झुर जाय शरीर कहांलौं मैं गमखाऊं ॥ ४५ ॥

प्रह्लादजीका बचन पांड़ेजीसे

दोहा छछ्छे छीक मनायके जज्जे जुगत विचार
सुमिरण कीजै रामका जाकी ज्योति अपार

पांड़ेजी जाकी ज्योति अपार जगत सुपने की माया ॥ मेरे घट में राम पार जिनका नहिं पाया ॥ पांड़ेजी झभझे झूंठे ख्याल हमें क्या ज्ञान बताया ॥ नन्ने निबके चलो अमर रहती नहिं काया ॥ ४६ ॥

पांड़ेजी बचन कहैं प्रह्लादजीसे

दोहा पहे घड़ी घड़ी मैं टालता तेरे घट में राम
कही सुनी मानै नहीं अकल भई बौरान

भैयारे अकल भई बौरान नाम प्रह्लाद कहाके ॥ साँटी मारूं चार पड़ै धरणी पै जाके ॥ भैयारे ऐसा ढीठ जो भया रहा मुक्ता समझाके ॥ देखूं तेरी दाद कौन तोहि लेगा छुड़ाके ॥ ४७ ॥

प्रह्लादजीका बचन पांड़ेजीसे

दोहा टट्टा टार करो नहीं जो सुधरें तेरे काम
मेरे तो वो एक है भली करेंगे राम ॥

पांड़ेजी भली करेंगे राम उन्हीं यह देह बनाई ॥ लज्जा राखनहार सदां संतन सुखदाई ॥ पांड़ेजी वो क्यों ठोकर खाय जिन्हों के राम दुहाई ॥ घड़ी २ प्रतिपाल भगतके सदा सहाई ॥ ४८ ॥

पांड़ेजी कहैं प्रह्लादसे

दोहा तू बालक नादान है डिगमिग करै शरीर
साँटी मारूं खैंचकै तो ढरै नैनों से नीर

प्यारेजी ढरै नैनोंसे नीर खड़ा तू बात बनावै ॥ बोले बचन कठोर पढ़ा तोपै नहिं जावै ॥ भैय्याजी सब दिन खेलन फिरै लाज तोको

(नहिं)

नहिं आवै॥ खैंच मरोड़ौं कान हमैं तू बहुत सतावै॥ ४९॥

पांडेजीसे प्रह्लादजी कहतहैं

दोहा पांड़ेजी रामभजा करो वेद कहै तत्कार
बिपतबिडारन दुखहरण जाकीज्योतिअपार

पांड़ेजी जाकीज्योतिअपार हमैं तू क्या समझावै॥ अमृत बूटी छोड़ घोल के बिषक्यों प्यावै॥ पांड़ेजी तू मेरा महाराज और कुछ कही न जावै॥ हंसा मोती चुगै तिन्हें तू चना चुगावै॥ ५०॥

प्रह्लाद जीसे पांड़ेजीका बचन

दोहा दद्दे दूबर होयगी कहना मेरा मान
धध्धे धड़के बैठजा नन्हा पनदे जान

प्यारेजी नन्हा पनदे छोंड़ बात मैं कहूं मतेकी॥ राम नामदे छोंड़ करो तुम हमसे नेकी॥ भैयारे राक्षस कुल अवतार भये तुम कौन बिवेकी॥ लेहु पिता का नाम करो मत हमसे सेकी॥ ५१॥

बचन प्रह्लाद का पांड़ेजीसे

दोहा दद्दे दूबर क्यों बने घटमें बोले राम
धध्धे धर्म्म पहुंचा नहीं ना काहू से काम

प्यारेजी ना काहू से काम रामका सुमिरण कीजै॥ नन्ने निकट बुलाय सीख ऐसी ना दीजै॥ पांड़ेजी बात कहो कोई सांच अर्ज मेरी सुनलीजै॥ बिषबूटी दे छांड़ घोट कर अमृत पीजै॥ ५२॥

जवाब पांड़ेजीका प्रहलादजीसे

पप्पा परपरे तू होयगा हमसे करै बिवाद॥
शुभकी घड़ी बिचारके तो नाम धरा प्रहलाद

प्यारेजी नाम धरा प्रह्लाद कही मेरी एक न मानी॥ तुम लड़का बेहोश सीख तुम लई बिरानी॥ प्यारेजी फफ़फे फैल मचाय पढ़ै तू राम कहानी॥ मैं रह्यों बहु समझाय कहा तैं मनमें ठानी॥ ५३॥

जवाब प्रह्लाद का पांड़े जी से

दोहा पण्ये परे वो होयगे जिनके मनमें पाप ॥
हाथ सुमिरिणी लेलई रही लोभमें व्याप

पांड़ेजी रही लोभमें व्याप लोभ खाड़े की धारा ॥ यासों बचो न कोइ लोभने सबको मारा ॥ पाड़ेजी जिसने त्यागा लोभ पलक में। भया है गुजारा ॥ भवसागर में आय उतरगयो परले पारा ॥ ५४॥

जवाब प्रह्लाद जीसे पांड़े जी का

दोहा बच्चे करें बुराइयां मम्मे भला न होय
मम्मे मनमें जानले बैठो गे कुलखोय

प्यारेजी बैठोगे कुलखोय लाज कुल कान बिगारी ॥ किन्ने दियो बहकाय अकल कहां गई तुम्हारी ॥ प्यारजी कौन मिला तोहि दूत सुरत टरती नहिं टारी ॥ लेवो पिताका नाम करो क्यों अपनी ख्वारी ५५

जवाब प्रह्लाद का पांड़े जी से

दोहा बच्चे बुरा न बोलते जो कोई भले होय
मम्मे मोती समुद्र के सार न जाने कोय

प्यारेजी सार न जाने कोय ताहि कोई शाह पिछाने ॥ महा मूढ़ अज्ञान सार उनकी क्या जाने ॥ पांड़ेजी तुम हमरे महाराज हमें क्या। लोगे पढ़ाके ॥ मूढ़ा हरिको नाम व्यर्थ कियो झगड़ा आके ॥ ५६॥

जवाब पांड़े जी का प्रह्लाद से

दोहा राम सुमिरना छोड़दे कहना मेरा मान
लाज कान कुल जायगी बहुते हो वैरान

पांड़ेजी बहुते हो बैरान रोज तुमको समझाऊं ॥ तू मेरा है शिष्य तेरा मैं गुरू कहाऊं ॥ प्यारेजी मान हमारी सीख राज की नीति पढ़ाऊं ॥ तू मूरख अज्ञान कहां लौ तुझे सिखाऊं ॥ ५७॥

वचन प्रह्लाद का पांड़े जीसे

दोहा रर्रे राजी रामके जिनके अद्भुत ख्याल
मन चाहै कारज करैं ऐसे दीन दयाल

पाँड़ेजी ऐसे दीनदयाल रची जिन लख चौरासी॥ बेद भरे हैं साख नाम जिनका अविनाशी॥ पाँड़ेजी सुर नर सुनि जन रटैं जाहि सब स्वर्ग निवासी तूड़ो ले बेइमान करै है जिनकी हांसी॥ ५८॥ वाक्य पाँड़े शुक्राचार्य्य का प्र॰॥

दोहा बादिन तेरा कौन है जादिन जन्म लियो
बटी बधाई महल में कंचन दान दियो

प्यारेजी कंचन दीये दान शोच मन में ना लाये॥ गजहस्ती अरु रत्न द्रव्य उन खूब लुटाये॥ प्यारेजी अब तुम बने कठोर राम से नेह लगाये॥ कुल में भये कुपूत भेद तेरा ना पाये ५९॥ प्रह्लादजी का बचन पाँड़ेजी से॥

दोहा वे हरि दीन दयाल हैं बिपत बिदारन हार॥
तिनका सुमिरण कीजिये तो भजिये बारम्बार

पाँड़े जी भजिये बारम्बार जगत के झूंठे नाते॥ राज देख रहै भूल फिरो क्यों मद के माते॥ पांड़ेजी राम सुमिरनो सार हमैं तुम कहा पढ़ाते॥ कहो औरसे और हमैं तुम नहीं सुहाते॥ ६०॥ पांड़ेजी का बचन राजाजी से॥

दोहा सुनत बचन प्रह्लाद के पुस्तक धरी सम्हार
बाँह पकड़ के ले चले राजा के दरबार॥

प्रभुजी राजा के दरबार जाय पण्डित ललकारे॥ तुम हो आपही राव मान क्यों मेरे मारे॥ राजाजी यह तेरा प्रह्लाद सम्हारे सेना सम्हारे॥ मेरे बश को नाहिं सुनों तुम बचन हमारे॥ ६१॥

पाँड़े शुक्राचार्य्य से राजा हिरराय कशिपु कहते हैं

दोहा पण्डित के सुन बचन को हिरराय कशिपु महराज
बोले बचन सम्हार के सुन मेरे महराज॥

पांड़ेजी सुन मेरे महराज कही सो मैंने जानी॥ बालक है प्रह्लाद उमर उस्की है यानी॥ पांड़ेजी हित सों देहु पढ़ाय बड़े तुम पण्डित

ज्ञानी ॥ दूंगा बहुत इनाम कहूं मैं सतकी बानी ॥ ६२॥

पांड़ेजीका बचन राजाजी से

दोहा तुमराजा महराजहो करोजगतको पाल
मेरेबशकी है नहीं तो बिगड़गई चटशाल

राजाजी बिगड़ गई चटशाल कही मेरी एक न मानी॥ जो मारूं मैं बेंत लड़ें महलोंकी रानी॥ राजाजी समझाया दिन रैन पढ़ैहै। राम कहानी॥ तुममेरे महराज कहूंमैं सतकी बानी॥ ६३॥

शुक्राचार्य्य से वाक्य राजा हिरण्यकशिपुका

दोहा तुमपण्डित बुन्याद के मैंसमझाऊं तोह
कानपकड़ लै जाइये मैं राखूं नहिं मोह॥

पाँड़ेजी मैं राखूं नहिं मोह करो तुम अपनी चाही॥ इसकी दाद फरियाद कोई लेनेका नाही॥ पांडेजी सांटी मारो चार पड़ै धरती पै जाई॥ पूतनहीं यह दूत करे मेरी लोग हँसाई॥ ६४॥

शुक्राचार्य्य का बचन प्रह्लादसे

दोहा वेपण्डित परबीण हैं कोमलजिनके गात
जा बैठे चटशालमें पकड़ कुंवरकाहात

प्यारेजी पकड़ कुंवर का हाथ कहे वो पण्डित ज्ञानी॥ तू मेरा है। शिष्य छोड़दे राम कहानी॥ प्यारेजी राज घरों के पूत कहीतैं किसकी मानी॥ ऐसी कहिये नाहिं कुंवरजी मुखसे बानी॥ ६५॥

जवाब प्रह्लादका पांड़ेजीसे

दोहा तूपण्डित भूला फिरै कहूं बचन समझाय
राम नाम जाना नहीं पापरहा मन छाय॥

पांड़ेजी पापरहा मनछाय अकल कहँ गई तुम्हारी॥ बिनाखम्भ के धरणि खड़ीहै हरि आधारी॥ पांड़ेजी सप्तद्वीप नवखण्डखलक। जानैहै सारी॥ तीनलोक मैं ज्योति अलखकी माया न्यारी॥ ६६॥

दूसरा बचन प्रह्लादका पांड़े से

दोहा रामनामके कारणो तनक नवायो शीश ॥
कहा बिभीषण दे मिले लंक दई बरद्यशीश

पांड़ेजी लंक दई बरद्यशीश फिरेहै राम दुहाई ॥ रावण को किया नाश जानकी लई है छुड़ाई ॥ पांड़ेजी सीता के मन राम पलट। कौशल को धाये ॥ भरत सुनी यह बात राम मिलनेको आये ई७॥

तीसरा जवाब प्रह्लादजीका पांड़ेजी से

दोहा रामबढ़ाये सोबढ़े बलकर बढ़ान कोय ॥
बलकरके रावण बढ़ा सो क्षण मेंडारा खोय

पांड़ेजी क्षण मेंडारा खोय लंक सी पुरी उजारी राक्षस कुल को। नाश करो सीताजी उबारी ॥ पांड़ेजी कुम्भकरण को मार सकल कुल करा बिनासी ॥ जो शरण गत भये काढ़ दी यमकी फांसी ॥ ई८॥

पांड़ेजी गुस्साहोके प्रह्लाद से बोले

दोहा सुनत बचन प्रह्लाद के पांड़े उठे रिसाय
मारा बेंत उठाय के पड़े धरणि पै जाय।

भैयाजी पड़े धरणि पै जाय सड़ा सड़ बेंत लगाई ॥ छोड़ राम का नाम पिताकी रवैंच दुहाई ॥ भैयाजी नातर करूं इलाज तेरी क्यों शाम न आई ॥ बर्जो माने नाहिं दुष्ट मोहिं देत दिखाई ॥ ई९॥

प्रह्लादजी का बचन पांड़े जी से

दोहा हँसके बचन सुनावते सुनो गुरूजी बात
मेरे घटमें रामहैं लई सुमिरणी हात॥

पांडेजी लई सुमिरणी हाथ हमें तू क्या समझावे ॥ अलख रूप ओंकार जिन्हों का पार न पावे ॥ पांड़ेजी जिन्ने रची है सृष्टि सर्वदा प्रलय करावे ॥ उनका सुमिरण करो नाहक में मन भटकावे ॥७०॥

سانگیت پرہلاد-۲۰

पांड़े का बचन राजा हिरण्यकशिपु से

दोहा सुनत बचन परिडत उठे ज़रा न लाये बार
बांह पकड़ आगे धरे धक्के दीये चार॥

प्रभुजी धक्के दीये चार पकड़ राजा पै लाये॥ यह तेरा प्रह्लाद पढ़ैगा नाहिं पढ़ाये॥ प्रभुजी हम तो हैं निर्दोष बहुत हमने समझाये॥ तू जानै तेरा काम कुंवर तेरे द्वारे आये॥७१॥

राजा का बचन पांड़े जी से

दोहा जा परिडत घर आपने मत कर शोच बिचार
तेरा पढ़ाया ना पढ़ै मैं नहिं रखता प्यार॥

पांड़े जी मैं रखता नहिं प्यार कुंवर की शामत आई॥ पूत नहीं यह दूत करै मेरी लोक हँसाई॥ पांड़े जी जिनका लेहै नाम सोहै मेरा दुखदाई॥ मार उड़ाऊं खाल करेगा कौन सहाई॥७२॥

प्रह्लाद का बचन राजा से

दोहा गुरू पढ़ाये सो पढ़े कक्के सिद्धो चार
एका पढ़ ग्यारा पढ़े गिनती के हज्जार

दाऊजी गिनती के हज्जार पढ़े हम बिकट पहाड़े॥ कक्के पढ़े अनेक लगे हरिनाम पियारे॥ दाऊजी राम नाम के हरफ़ मैंने हिरदे में धारे॥ अरु सब झूँठे ख्याल जगत में धुंध पसारे॥७३॥

राजा का बचन प्रह्लाद से

दोह हम राजा के तेज हैं तू बालक नादान
कही सुनी मानै नहीं बहुत करूं बैरान

प्यारे जी बहुत करूं बैरान भयो तू फिरै दिवानों॥ शहर बसे। मुलतान मेरा सब जगने जानों॥ प्यारे जी हस्ती घूमें द्वार बजै मेरे नौबत खानों॥ हीरा मोती लाल दरब को भरो खजानों॥७४॥

प्रह्लादका बचन राजा हिरण्यकशिपुसे

दोहा पदम करोड़ोंहोगये बड़े शूर महमंत ॥
एक नाम ओंकारको जगमें रहगया तंत

दाऊजी जगमें रहगया तंत जगत मैंने सुपना जाना ॥ मनमें उपजा ज्ञात तजा मैंने गर्ब गुमाना ॥ दाऊजी लाखों राजा भये। असुर बहु जोड़ खजाना ॥ चंदन उपटे अंग सोई धरदिये। मसाना ॥७५॥

राजाका बचन प्रह्लादसे

दोहा राजतपै नौखण्डमें नाह बर्ण कुलहीन
गण दैयत अरु देवता सोबी रहैं अधीन

प्यारेजी सोभी रहैं अधीन हुकम मेरे जगमें भारे ॥ ब्रह्माके बरदान बचन शिवशंकरहारे ॥ प्यारेजी अमरकरी मेरी देह टरै नारणाते टारे ॥ जिनका लेतू नाम देश कहुँ उनके न्यारे ॥७६॥

प्रह्लादका बचन राजाजीसे

दोहा घट घट रहा बिराजके मुखसे बोलो राम
रोम रोम में बसरहा नहीं और से काम

दाऊजी नहीं औरसे काम हमैं हरिनाम पियारे ॥ तीन लोकका नाथ रचे जिन जगत पसारे ॥ दाऊजी संतनकी प्रतिपाल कोप कर असुर सिंहारे ॥ तुमको है अभिमान फिरो क्यों मदके मारे ॥ ॥७७॥

जवाब राजाका प्रह्लादसे

दोहा राजा उठे रिसायके चाबुक लियो मँगाय ॥
मया मोह राखूं नहीं दूंगा खाल उड़ाय ॥

प्यारेजी दूंगा खाल उड़ाय कहा मेरा नहिं माने ॥ इकछत मेरा राज जगत मुझसे भय माने ॥ प्यारेजी तुम भये भले कपूत लगे हो लोग हंसाने ॥ मोसों करै जवाब राजके झगड़े ठाने ॥७८॥

प्रह्लादका बचन राजासे

दोहा करजोरूं अर्जीकरूं लगा रामसे ध्यान
जिनके हम आधीन हैं तुम करते अभिमान

दाऊजी तुम करते अभिमान सदा जग रहा न कोई ॥ रहा राम का नाम सदा जग रहा न सोई ॥ राजाजी राज देख मत भूल सदा तेरा राज न होई ॥ यश बाकी रह जाय बात अपनी क्यों खोई ७९

राजाजी का बचन प्रहलाद जीसे

दोहा पूत नहीं मेरा दूत है करै साम ने बाद।
बिन मारे छोडूं नहीं बोलालिये जल्लाद

भैयारे बोलालिये जल्लाद सुनो एक बात हमारी ॥ लेजा इसको बांध करे क्यों शोच बिचारी ॥ भैयारे यह राजों की रीति पैजट रती ना टारी ॥ इसको डालो मार सभी देखें नर नारी ॥ ८० ॥

जबाब राजा से जल्लाद का

दोहा तुम राजा महराज हो बैठ रहो गम खाय
ऐसो कुँवर बिना शाके फिर पीछे पछताय

फिर पीछे पछताय यतन कुछ बनि नहिं आवै ॥ लाख यतन तुम करो कुँवर ऐसा नहिं पावै ॥ रही जायगी बिगड़ कौन तेरा बंश बढ़ावै ॥ यह तेरा प्रहलाद जगत में नाम चलावै ८१ ॥ ज.रा. प्रहलाद से

दोहा रिस भर के राजा कहै क्या समझावे मोहिं
हुकम अदूली ढ करै मैं पहले मारूं तोहिं

भैयारे पहले मारूं तोहिं बचन तोकूं समझाऊं ॥ खैंच मरूं तो खाल ज़रा नहिं देर लगाऊं ॥ भैयारे दूंगा अगिनि लगाय शोच मन में ना लाऊं ॥ तपै राज नौखण्ड बखत ऐसा नहिं पाऊं ॥ ८२ ॥

जल्लाद ने बचन कहा राजा से

दोहा काली ल्योरी देख के बोले बचन सम्हार
मारूंगो प्रहलाद को ज़रा न लागे बार ॥

राजाजी ज़रा न लागे बार काममैं तेरा सारूं ।। तुम राजा महराज हुकुम तेरा ना टारूं ।। राजाजी शूलीसे बचजाय तुरत फांसी दे मारूं ।। गिरवर पै ले चढ़ूं कुँवर को व्हांसे डारूं ।। ८३ ।।

राजाका जवाब जल्लादसे

दोहा बाँह पकड़ ले जाइये कहूं बचन समझाय।
दीजै कुँवर बिनाशके तू दहशत क्यों खाय

भैयारे तू दहशत क्यों खाय बात मेरी करो कबूली ।। दूँगा बहुत इनाम हुकुम क्यों करो अदूली ।। भैयारे तू नेक दरद मत करै कुँवरको धरदो शूली ।। खाये मेरे माल कुँवरकी काया फूली ।। ८४ ।।

बचन जल्लादका प्रह्लादसे

दोहा राजनीति जानी नहीं याते हुआ बेपीर
सूरत देखी कुँवरकी ढरै नैनोंसे नीर

प्रभुजी ढरै नैनोंसे नीर उमड़के आई छाती ।। ना कुछ मेरा दोष नहीं। कुछ पार बसाती ।। प्रभुजी ऐसे सूरख बने खराब देखे अपघाती ।। जो शूली दूँ नाहिं मंगावै खूनी हाथी ।। ८५ ।।

जवाब जल्लाद से प्रह्लाद का

दोहा सूरत जिनकी सोहनी कोमल जिनके गात
बोले बचन सम्हारके सुन जल्लाद मेरी बात

भैयाजी सुन जल्लाद मेरी बात पिता मेरा तप धारी ।। हुकम टरैगा नाहिं तेज जिनका है भारी ।। भैयारे शूली पर धरि देउ करौ मत शोच बिचारी ।। कलम निमानी बगी टरै ना तुमसे टारी ।। ८६ ।।

जवाब जल्लादका प्रह्लादसे

दोहा हाथ मरोड़ै शिर धुने शोच करै पछिताय
यह राजा सूरख भया क्या मेरी पार बशाय

प्यारे जा क्या मेरी पार बशाय भये राजा दुख दाई ।। हाल कहै प्रह्लाद

सेहर जिनको नहिं आई ॥ शूली लईहै मँगाय ज़रा नहिं देर लगाई ॥ धरे कुँवर प्रह्लाद भये हैं रामसहाई ॥८७॥ प्र॰ वचन

दोहा शूलीबड़ी कठोरहै धारबड़ीहै तेज ॥
लगी कुँवर प्रह्लादको फूलोंकीसी सेज

प्यारेजी फूलोंकीसी सेज कुँवर प्रभुके गुणगावै धन्य मेरा महराजपारजिनका नहिं पावै ॥ प्यारेजी निश्चय करके रटो बिपत में फंद छुडावै ॥ दरशनसे गति होय कुमतिके धामबसावै ॥८८॥

हिरण्य कशिपु का वचन जल्लादसे

दोहा राव कहै जल्लादसे क्या तेरी पह चान ॥
पकड़ भुजा दे मारके कहना मेरा मान

भैयारे कहना मेरा मान ऐसी क्या हिम्मत हारी ॥ पेशा कब्ज़ लेहा प्रकुँवर के मार कटारी ॥ भैयारे उपजे पेड़ करील जहां मेरी केस रक्यारी ॥ बिगड़ गई सबरवीर नौनजामें पड़गया खारी ॥८९॥

जवाब प्रह्लाद का जल्लादसे

दोहा हमेरा जल्लादहै ना कुछ तेरा दोष ॥
खड़े पिताहैं सामने मेरी नाड़ मसोस

भैयारे मेरी नाड़ मसोस मारमेरे चार तमाँचे ॥ मेरे पिताके क़ौल करो तुम पलमेंसाँचे ॥ भैयारे बिधनाकेरे अङ्क लिखे मेरे किसने बाँचे ॥ कलम निमानी बगी रहै नामनसेंसाँचे ॥९०॥

जल्लाद का वचन प्रह्लादसे

दोहा सुनत बचन प्रह्लादके दोनोंमीड़े हात
मेरेबशकीहै नहीं सुनोंकुँवर मेरी बात

प्यारेजी सुनो कुँवर मेरी बात देखके जी घबड़ावै ॥ ऐसामिला नरकौन आयके तोहिं छुड़ावै ॥ प्यारेजी तुमकारसा दूं शाप यनन कुछ बन नहिं आवै ॥ याद करो कर्त्तार बातसबही बनि आवै ९१

प्रजाबन्धु

राजा का बचन जल्लाद से

दोहा उठा राव ललकार के क्यों करता है देर
मार गेर प्रहलाद को मेरा डर दे गेर ॥

भैयारे मेरा डर दे गेर कुंवर को देदे फांसी ॥ जभी पड़े मोहि चैन रहै सुख बारह मासी ॥ जाको लेहै नाम करै मेरी जग में हाँसी ॥ एक छत मेरा राज कौन जानै अबिनासी ॥ ९२ ॥ जल्लाद का ज॰ प्र॰ ॥

दोहा राजा के सुन बचन को हिरदय किया कठोर
पकड़ भुजा प्रहलाद की करै कुँवर पै जोर

प्रभुजी करै कुँवर पै जोर पकड़ धरती से मारे ॥ छाती पै चढ़ गये कुँवर को फंदा डारे ॥ प्रभुजी पेशक ब्रज लिये हांथ कुँवर को जब ललकारे ॥ छोंड़ राम का नाम बचन तू मान हमारे ॥ ९३ ॥

प्रहलाद का बचन जल्लाद से

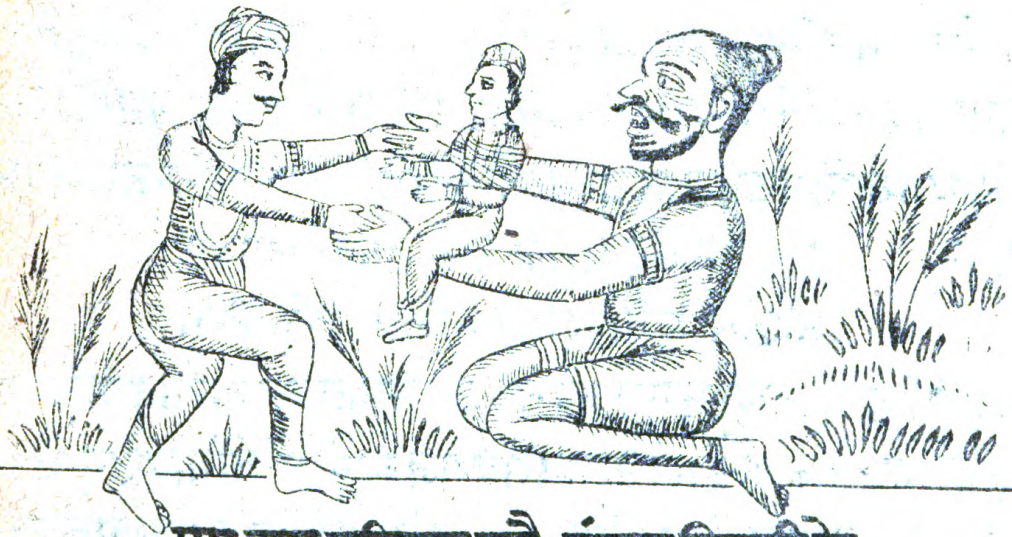

राम नाम सुमिरण करै कंचन जिन की देह
फांसी से भी बच गये तौ हरि से लागा नेह

प्रभुजी हरि से लागा नेह देखते नर औ नारी ॥ दादी बूवा तके खड़ी देखे महतारी ॥ प्रभुजी दिल में धीरज बांध बात मैं कहूं बिचारी ॥ घट में बोले राम जान जिन को नहिं प्यारी ॥ ९४ ॥

प्रहलादजीकी बूवा कहै अपने भाई से ॥

दोहा तषहिरणा कुशकी बहन बोली बचन सम्हार
क्योंमारे प्रहलाद को बेटे तेरे हैं चार ॥

भाईरे बेटे तेरे हैं चार भजनमें हैगा एकी ॥ कठिन तपस्याकरीज-
भी वाकी सूरत देखी ॥ नेक दरद तो करो कुँवरहै बड़े बिबेकी ॥
जोमारे प्रहलाद नारहै तेरी सेखी ॥ ९५ ॥ ज.रा.का अ. बहनसे

दोहा जा अपने घर बैठ रह तोकूं ना कुछ सूझ
जोकोई सुमिरे रामको मारूंगा बिनबूझ

बीबीरी मारूंगा बिनबूझ करूंगा मनकी चाही ॥ नामदिया मेरा
छोंड़करी मेरी लोगहँसाई ॥ बीबीरी जाकोलेहै नाम सोई मेरा दुख
दाई ॥ यह सुमिरे दिनरात लाज वाको नहिं आवै ॥ ९६ ॥ ज.ब.रा.

दोहा बालक इनकी बुद्धिहै शोच नहीं दिनरात
ऊंच नीच जाने नहीं तू सुन भैया मेरी बात

प्यारेजी सुन भैया मेरी बात कुँवर को तू मत मारे ॥ शुभकी घड़ी अ-
वतार महलमें लिये तुम्हारे ॥ भैयारे जा दिन जन्मे कुँवर बजी तेरे नौब
त द्वारे ॥ यह तेरा प्रह्लाद बरवत में कारज सारे ॥ ९७ ॥ रा.ज. बहनसे

दोहा इकछत मेरा राजहै एक तनका परिवार
जोकोई सुमिरे रामको वाकूं डारूं मार।

बीबीरी वाकूं डारूं मार कुँवर को तू समझावै ॥ वाको नाम बिसार
हुक्म मेरा जो बजावै ॥ हमराजा महराज खड़ा मोंसों बाद लगावै ॥
मारूंगा बिनबूझ कुँवर देखा नहिं भावै ॥ ९८ ॥ बूवा समझावै प्रह-
लादको ॥ रागसो० ॥ कुँवर मेरे खैंचो पिताकी दुहाई। अब क्यों।
मरते बिन आई ॥ नामपिता का मनसे त्यागे हरिकी करत बड़ाई ॥
राजतपै चहुंदेश तुम्हारो सबदेवन भय खाई ॥ मात पिताने जन्म दि-
याहै तिनकी करत बुराई ॥ बरजरही बरजो नहिं मानैं कररहा लोग।

हँसाई ॥ भजन भावमें प्रीति लगाई ऐसी कुमति कमाई ॥ लाज का-
न कुलकी सबखोई। तुमहमको दुखदाई ॥ शोच समझाय घरबैठर
होगे बाटूंगी अनंदबधाई ॥ लक्ष्मण शरण सदा चरणोंकी कर्म
लिखा सोइ पाई ॥ ३ ॥ जवाब प्रह्लाद का बुवासे ॥ राग सोहनी ॥
हरदम हरिसों प्रीति लगावो यह जग सुपना जानरे ॥ मेरी मेरी करता
डोलै ऐसी जगत बेईमानरे ॥ व्हांकी माया व्हांई रहजाव जिनके
भरे खजानरे ॥ ऐसा निपट संसार अनारी हरिको नहिं पहिचानरे ॥
कंचन काया देह मिलीहै बहुत करै अभिमानरे ॥ काम क्रोध मद
लोभमें छाये ते जगमें बौरानरे ॥ क्षणमें पार उतरगये सोई जिन्हे ध-
र्मकी वानरे ॥ लक्ष्मण सदा शरणहैं तेरी करते सुमिरण ध्यानरे ॥

बचन बुवाका प्रह्लाद से

दोहा सुनिभैयाकी समझको बोली राज कुमार।
बांहपकड़ पुचकारती किया कुँवरकोप्यार

प्यारेजी किया कुँवर को प्यार सुनो प्रह्लाद पियारे ॥ तेरी सूरत
कुर्बान मेरे नयनोंके तारे ॥ प्यारेजी रामनामदे छोंड़ बंशके रा-
खनहारे ॥ लेवो पिताका नाम बचन तू मान हमारे ॥ ९९ ॥

जवाब प्रह्लादका बूवाजीसे

दोहा क्याहमको समझावती रामनाम आधार।
निरङ्कार निर्भय रहै जिनकी ज्योति अपार

बुवाजी जिनकी ज्योति अपार अर्ज मेरी सुनिलीजै ॥ बोलो बचन
सम्हार सीख ऐसी ना दीजै ॥ बुवाजी कौन पिता अरु पुत्र
रामका सुमिरण कीजै ॥ अमृत प्याला छोंड़ घोलके
बिष क्यों पीजै ॥ १०० ॥

जवाब बुवाजीका भतीजेसे

दोहा कौन दुष्ट पैदाहुये तुम मूरख अज्ञान

कही सुनी मानै नहीं महा मूढ़ ना दान॥
प्यारेजी महा मूढ़ ना दान कही मेरी एक न मानी॥ कुलमें भये। कुपूत सीख तैंने लई बिरानी॥ बेटा रे कौन मिला तोहि दूत पढ़ाई राम कहानी॥ ऐसी चहिये नाहिं कहूं मैं सतकी बानी॥१०१॥

दूसरा जवाब बुवाका भतीजे से

बालक तेरी बुद्धि है करै बापसे बाद॥
नाहक मारा जायगा ना कोई ले फ़रियाद
प्यारेजी ना कोई ले फ़रियाद पूत तेरी स्यामत आई॥ पिता लेगा जब पकड़ तुझे कोई नाहिं छुड़ाई॥ काटे तेरा शीश खड़ी देखे तेरी माई॥ तू मेरी कही मान छोड़दे राम दुहाई॥१०२॥

जवाब भतीजे का बुवासे

पैदा कर पालन करै उनहींके आधार॥
सब जीव जंतु जाको रटैं उनकी ज्योति अपार
बुवाजी उनकी ज्योति अपार कोई दिन दर्शन मेला॥ पड़ा रहै सब ठाठ हंस उड़ जाय अकेला॥ बुवारी कितने राजा हुये काल सब के शिर खेला॥ हाथ पसारे गये साथ ना चलता। धेला॥१०३॥

दूसरा बचन प्रह्लाद का

दोहा लाखों राजा होगये करके अपना जोर।
हाथ पसारे वे गये जिनके लाख करोर
बुवारी जिनके लाख करोर फ़ौजके चढ़े रिसाले॥ लर्जे थे आकाश खम्भ धरती के हाले॥ बुवाजी इकछतं करते राज टरैं ना रणसे टाले॥ काल बली सब डसे राम रह गये। निराले॥१०४॥

जवाब बुवाका प्रह्लादजीसे

दोहा रामसुमिरणा छोड़दे जोतू चाहै ख़ैर।
तेरे भलेकी मैं कहूं नाहक बाँधेबैर॥

प्यारेजी नाहक बाँधे बैर करे तू जोरावारी॥ पढ़के पत्थर हुये। अकल कहँ गई तुम्हारी॥ बेटारे राज घरों के पूत कही तू मानहमारी॥ जान जाय क्यों करै कुँवर तू अपनी ख्वारी॥१०५॥

राजाका बचन जल्लादसे

दोहा रिसभरके राजाकहै अबना रहा सवाद
करकी मुश्क चढ़ायकै सुनमेरे जल्लाद

भैयारे सुनमेरे जल्लाद बात सुन लीजै मेरी॥ माया मोहदे त्याग करे क्यों इसको देरी॥ भैयारे एक योजन गिर खड़ा गेर तुम इस्को दीजै॥ अधबिच तजै पिरान कुँवर की काया छीजै॥१०६॥

जवाब जल्लाद का प्रह्लाद से

मया मोह राखा नहीं त्यागदिये सब नेह
लेगिर वर पर चढ़गये थर थर कांपे देह

भैयारे थरथर कांपत देह नीर नयनन भरि आये॥ देखि कुँवर का रूप बहुत मनमें मुरझाये॥ भैयारे बिधना लिखित कुअङ्क मिटैंगे नाहिं मिटाये॥ मेरे बश की नाहिं लिखे कर्म्मन के पाये॥१०७॥

राजाका बचन जल्लाद से

रावकहै ललकारके बैरी है प्रह्लाद
देगिर वर से डार तू सुनमेरे जल्लाद

भैयारे सुनमेरे जल्लाद राज मेरा नहिं जाना॥ लेगिर वर पर चढ़ो कुँवर ने भय नहिं माना॥ भैयारे फांसी से बचगया काल। अब आया नेरा॥ जोमारे प्रह्लाद द्रव्य दूंगा बहुतेरा॥१०८॥

जवाब जल्लादका राजासे

दोहा हमतेरे जल्लादहैं पाये तेरे बहुत इनाम
याद किये सरकारने आये तेरे काम

राजाजी आये तेरे काम कुंवरकी सूरत प्यारी ॥ देखतहैं नरनारि शहरकी दुनियां सारी ॥ हरेनयनोंसेनीर भई दिलमें लाचारी ॥ तूराजाबेपीर गईतेरी मतिमारी ।१०९॥

बचन प्रहलादकाजल्लादसे

दोहा बालकजिनकीबुद्धिहै बोलेबचन सम्हार
मेरेपिता के सामने दे गिरवर से डार।

भैयारेदे गिरवरसेडार अर्जमेरी सुनलीजै ॥ मेरेपिताके कौल। आज पूरेकरदीजै ॥ भैयारे क्यों ठाढ़े दिलगीर शोच मनमेंनाकीजै ॥ मेरे घटमें रामरहान जैसे अमृत पीजै ॥११०॥



जवाब जल्लाद का हिरराय कशिपु से

दोहा बचन सुनत प्रह्लाद के ब्याकुल भये शरीर
कही सुनी माने नहीं तुम राजा बे पीर ॥

प्यारेजी तुम राजा बे पीर कुँवर की साल न जानी ॥ ऐसे भये कठोर कहा जिन एक न मानी ॥ प्यारेजी जप तप किये अनेक भये ऐसे अभिमानी ॥ जो मारो प्रहलाद होय तुमको वैरानी ॥ १११ ॥

राजा हिरराय कशिपु कहता है जल्लाद से ॥

दोहा हम राजा के तेज हैं क्या समझावै मोहिं।
दे गिरवर से डार तू नहिं पहिले मारूं तोहिं

भैयारे पहिले मारूं तोहि खड़ा क्यों बात बनावै ॥ हुक्म दिया मेरा गेर बहुत हमको समझावै ॥ भैयारे हिरदा करो कठोर शोच मनमें मत लावै ॥ दे गिरवर से डार कुँवर ढूँढ़ा नहिं पावै ॥ ११२ ॥

बचन जल्लाद का गिरवर से डालना

दोहा राजा के सुनि बचन को किया कुँवर पै जोर
मया मोह राखा नहीं ऐसे बने कठोर।

प्रभुजी ऐसे बने कठोर शोच मनमें जब कीये ॥ यह लड़का पर बीरा जन्म असुरन घर लीये ॥ प्रभुजी यह राजा बे पीर कठिन हैं इनके हीये ॥ दिलमें धीरज बांध डार गिरवर से दीये ॥ ११३ ॥

प्रहलादजी की परमेश्वर ने रक्षा करी

दोहा वे हरि दीन दयाल हैं वेद भरे हैं साख ॥
अपनों जन पहिचान के लिया हाथ पै राख

प्रभुजी लिया हाथ पै राख ज़रा नहिं देर लगाई ॥ असुर संहारन हार सदा संतन सुखदाई ॥ प्रभुजी लख चौरासी रटैं थाह जिन की नहिं पाई ॥ सब घट रहा बिराज कहां लगि करूं बड़ाई ॥ ११४ ॥

राजाजी का बचन सारी सभा से

दोहा राव रहे सुरझाय कै वैरी मारो न जाय॥
धड़क धड़क छातीकरै नयननरोयकराय
भैयारे नयननरोयभरिआये राव दोबचन सुनावै॥ है कोइ ऐसा कोइ। दूत कुँवर को आगे लावै॥ भैयारे सिंतर ऐसा कौन मेरा संदेहा मेटावै॥ जोमारे प्रह्लाद तलब घर बैठे पावै॥११५॥

दूसरा बचन राजा का सभा से

दोहा है कोइ ऐसा शूरमा पहले करै प्रहार
दूनी दूंगा नौकरी जो कोइ लावै मार
प्यारेजी जो कोई लावै मार कुँवर को डाल पछाड़ै॥ दूंगा बहुत। इनाम मेरे सब कारज सारै॥ प्यारेजी कुँवर मारा नहिं जाय यत नमैंने किया घनेरा॥ इसझगड़े के बीच काल कहिं आया मेरा॥११६॥

राजाहिरण्य कशिपु से बचन बहेन का

दोहा बोबूवा प्रह्लाद की पकड़ कुँवर को हाथ
खैंच अगाड़ी ले चली सुनभैया मेरी बात
प्यारेजी सुनभैया मेरी बात कुँवर को आगे लाई॥ बोली बचन सम्हार करूं तेरे मनकी चाई॥ प्यारेजी सोपर शीतल चीर जल्दगी नाहिं जलाई॥ अगिनिहुताशन करूं कुँवर को यह ठहराई॥११७॥

राजा का वाक्य बहेन से

दोहा चंदन लिये मँगायके दिये चाक में डार
सहज झाड़ मेरे मिटैं अबना करो अबार
बीबीरी अबनाकरो अबार मिटेंगे जी के सांसे॥ देखेंगे सब लोग शहर के आजनमासे॥ बीबीरी फूले अंग न समाय खिला जैसा पिय बासे॥ ऐसा दिया पिलाय गगनजैसी चंद्रप्रकासे ११८

बुवा भतीजे को लेकर बैठ गई

दोहा मया मोह राखा नहीं गोद लिये प्रह्लाद
चिंता लई चिनवायके बैठी दिलको साद
प्यारेजी बैठी दिलको साध कुंवरको अर्ज लगाई ॥ कंचन बने।
शरीर आजतेरी शामत आई ॥ प्यारेजी बर जो माने नाहिं करी।
तैने अपनी चाई ॥ जोद्ध चाहै वैर पिताकी खैंच दुहाई ॥ ११८ ॥

प्रह्लाद का वचन बुवासे

दोहा होनी तोहोके रहै जो कुछ लिखा विचार
अनहोनी होती नहीं वेद कहै तत्कार ॥



बुवारी वेद कहै तत्काल लिखी कर्मों की होहै ॥ तीन लोक को नाथ और अवधूजा कोहै ॥ बुवारी आदि पुरुष अवतार करेवो सोई सो है ॥ जिनका सुमिरण करूं मेरे क्या सत कोटी है ॥ १२० ॥

जवाब माता का

दोहा लकड़ी जल कोइलाभई कोइलाजल भइ राख

मैंपापिन ऐसी जली कोइला भईन राख॥
कुँवर मेरे किन दूतिन बहकाये ताको रामहि राम सुहाये॥ एक दिन जन्म लियो मेरे महलों कंचन दान लुटाये॥ घर घर सेवनिता बन आई गायेहैं आनंद बधाये॥ बरजरही बरजो नहिं माने बहुतेरा समुझाये॥ नामपिता का मनसों त्यागे हरिसों हेतु लगाये॥ घरकी नँनदिया भई मेरी बैरिन लेके अग्नि बैठाये॥ यतनकरूं कुछ बन नहिं आवै मरूं कटारी खाये॥ मान गुमान करो मतकोई अद्भुत ख्याल बनाये॥ लक्ष्मण शरण सदा हरि तेरी कर्म्म लिखा सोइ पाये॥१२१॥

जवाब माताका

कुँवर प्रह्लाद भगत पहिचानी तू सुनले कर्म्म कहानी॥ जादिन तै उपदेश लियोहै मननिश्चय करजानी॥ हरि को नाम सदा सुखदाई वाबिन विपत बिरानी॥ ले प्रह्लाद धरो शूली राजाभये अज्ञानी॥ जब प्रह्लाद लगाई फांसी व्हां नहिं शंका मानी॥ धरती ने रख लीनी जैसे लाली जगमें रही नहीं छानी॥ ले प्रह्लाद होलिका बैठी अंग में लागा पानी॥ लक्ष्मण राम सुमिर गुण गावै यह कुदरत की बानी॥१२२॥

जवाब माताका प्रह्लादसे

दोहा वो माता प्रह्लादकी बोली बचन सम्हार
शुभ घड़ी में पैदा हुये तुम मेरे अवतार

बेटारे तुम मेरे अवतार भये प्रह्लाद पियारे॥ बरजे माने नहीं बहुत तुमसे पचिहारे॥ बेटारे जादिन जन्में कुँवर धरी मैंने नौबत द्वारे॥ नेक न राखी कान भये तुम हमसे न्यारे॥१२३॥

जवाब प्रह्लादजीका मातासे

दोहा माताकेसुनिबचनको ढरैनयनोंसेनीर
हरिबिन मेरा दूसरा कौन बँधावै धीर
माताजीकौन बँधावै धीर हमें हरिनाम पियारे॥ और सबैहैं ख्या-
लजगतमें धुन्ध पसारे॥ मातारी नेक दर्द नातोहि सुनो तुम बचन
हमारे॥ क्या मेरीतकसीर किये तैने दिलसे न्यारे॥१२४॥

बचन प्रह्लादका माता से

दोहा जन्मत विष क्यों नादिये हमको हालमगाय
मेरेघटमें रामहैं तो अब क्योंसनपछताय
माताजी अब क्यों मन पछिताय मौत मेरे पास न आवै॥ चन्दनदे-
हु जराय अग्नि मोहि नाहिं जरावै॥ माताजी भक्त सी में करो बन्द
मुझे व्हांसुख दिखलावै॥ सिंहन में दो डार मुझे व्हाँ राम बुड़ा
वै॥१२५॥ जवाब माताका प्रह्लाद से

दोहा सुनतबचन प्रह्लाद के व्याकुलभये शरीर
सब काया मुरझागई ढरै नयनों से नीर॥
भैयारेढरे नयनोंसे नीर उमड़के आई छाती॥ तोमैं जान्यो लाल।
पहिले मइया मरजाती॥ भैयारे राम नाम दे छोड़ बन्द मैं तेरी सा-
ती॥ तेरा पिता बेपीर नहीं मेरी पार बसाती॥१२६॥

दोहा चातर से मूरख बने करै पिता से बाद॥
जादिन तू पैदा भया नामधरा प्रह्लाद
बेटारे नाम धरा प्रह्लाद करो तुम मनकी बानी॥ इस हठको तू
छोड़ कहै मत राम कहानी॥ बेटारे बिन आई क्यों मरे ऐसी कुबु-
धि कमाई॥ तेरे कारण लाल जगतमें हुई रुसवाई॥१२७॥

जवाब प्रह्लाद कामातासे

दोहा कमियान क्यों मरै कहूं बचन समझाय
से ना जारे काठने क्यों सोना जरजाय

माताजी क्यों सोना जरजाय काटको ठोक जरावै ।। ऐसा हरिका नामपार जिनका नहिं पावै ।। माताजी अलख रूप ओंकार आप नर देह बनावै ।। झूठा सब संसार नाहकमें भरम गँवावै ।।१२८।।

जवाब प्रह्लादका मातासे

दोहा सुपनेकेसे ख्यालहैं कोइ दिन जगमें देख ।।
वो मेटे मिटती नहीं जो लिखी कर्म्मकी रेख

माताजी लिखी कर्म्मकी रेख मिटे कोइ नाहिं मिटाई ।। पिता होय मोपै कोप कहौ फिर कौन बचावै ।। माताजी ले बैठी बुवा पास चितामें अगिनि लगावै ।। हरि बिन कौन सहाय वहां मेरी जान बचावै ।।१२९।।

जवाब माताका प्रह्लादसे

दोहा जा दिन तुम पैदा हुए पाला दूध पिलाय
जो मैं ऐसा जानती देती बिष मिलवाय

बेटा रे देती बिष मिलवाय पालके किये बड़े रे ।। बेटा मेरे चार प्यार तोहि किये घने रे ।। बेटा रे ऐसे बने कठोर बचन नहिं मानै मेरे ।। नेक न राखी कान कठिन है हिरदा तेरे ।।१३० ।।

जवाब प्रह्लादका मातासे

दोहा वे तिरलोकी नाथ हैं जिनकी मोकों आश
जैसे सीप समुद्रमें करै स्वातिकी आश

माताजी करै स्वाति की आश ऐसा मेरा हरिसे नेहा ।। जिनकी थाह अपार दई मोहि कंचन देहा ।। माताजी तू समझावै मोहि उठे मेरे मनमें नेहा ।। घटमें बोलै राम लगे मोहिं अधिक सनेहा ।।१३१।।

जवाब प्रह्लादसे माताका

दोहा राम नाम जाना नहीं करै और की और
हरिका नाम बिसारके कहीं न दीखे ठौर

माताजी ना कहिं दीखै ठौर तुम्हैं मैं क्या बतलाऊं ।। जिनके नाम

अधार उन्हींके मैं गुणगाऊं ॥ माताजी उसबिन मोहिं न चैन रहै। दिन रातरी माईं॥ वाबिन मेरी कौन करेगा आनसहाई॥१३२॥

जवाबमाताका प्रह्लादसे

दोहा तूहेसुनमैं मातुहूं कहना मेरा मान ॥
मया मोह क्योंतज दिये नेक न राखी कान

बेटारे नेक न राखी कान भये ऐसे निरमोही॥ कौन मिला तोहि। दूत लाजतैने कुलकी खोई॥ बेटारे बरज रही दिनरात नयनभरभरके रोई॥ दुखतेपाले लाल आजतैने मात बिछोई॥१३३॥

जवाब प्रह्लादका मातासे

दोहा गंग निकट पै जो बसै ते क्यों पौरवर न्हाँय
मातुपिता घर जीवते क्यों वो तीरथ जाँय
द्रव्य देखना गर्बिये बिपति पड़े ना रोय
समय बटाऊ आपने लखिलीजैसब कोय

माताजी लखि लीजै सब कोय मैंने हिरदे में जानी॥ राजकरंतेगयेगई परदेकी रानी॥ माताजी क्यों समझावै मोंहि भरे नयनों से पानी॥ क्यामेरी तकसीर भजे मैंने अंतरयामी॥१३४॥

जवाव माताका प्रह्लादसे

दोहा मनहिसरीखापावनी मनही की परतीत
मनके हारे हारहै मनके जीते जीत॥
जादिन तुम पैदाभये हमको पड़ी न सूझ
जन्मतजहर मँगाय के प्यादेती बिन बूझ

बेटारे प्यादेती बिन बूझ बहुत जनके पछताई॥ ना कुछ मेरा दोष कुमत हम से बनि आई॥ बेटारे नाम धरा प्रह्लाद। भये हमको दुख दाई॥ मरूं जहर बिष खाय करी मेरी लोग हँसाई॥१३५॥

जवाब माता से प्रहलादजीका

दोहा होनी तो होकर रहे अनहोनी नाहिं होय
विधनाके आखरनको मेटन सकता कोय

माताजी मेटन सकता कोय कलम करतार बनाई ॥ लाख यतन कर लेहु मिटैगी नाहिं मिटाई ॥ माताजी क्या तुम को संदेह मेरे मन ऐसी आई ॥ नहीं किसी को दोष हुई जो हरिने चाई ॥ १३६ ॥

जवाब माता का प्रहलाद से

दोहा बच्चेको समझाय लो बैठ रहो घर माहिं
महा दुष्ट ऐसे भये माने गोय नाहिं ॥

बेटा रे माने गोये नाहिं काल तेरे शिरपै खेले ॥ समझाऊं दिन रात गज़ब हू ऐसे बोले ॥ बेटा रे नदी नाव संयोग कोई दिन दर्शन देले ॥ जोड़ो पिताको हाथ भलाई ऐसी लेले ॥ १३७ ॥

जवाब माता से प्रहलादजीका

दोहा राज देख भूली फिरै कहै और की और
हरिका नाम बिसारके कहीं न दीखे ठौर

माताजी ना काहुं दीखे ठौर जगत सुपने की माया ॥ एक दिन मरना होय अमर रहती नहिं काया ॥ माताजी हरिके सुमिरे नाम। बहुत हमसे सुख पाया ॥ तुम घर भोगो राज हमैं हरि नाम सुहाया ॥

१३८। दूसरा जवाब प्रहलाद का माता से

दोहा रामराम सुमिरता करू जबलग घटमें प्रान
कबहूं दीनदयाल को भनक पड़ैगी कान

माताजी भनक पड़ैगी कान बचन हू मान हमारे ॥ सब मिलके कर होराम पाप कट जाँय तुम्हारे ॥ माताजी वे हरि दीनदयाल जगत के पाले रीसाई ॥ मेरा पिता महाराज उन्हीं से करें लड़ाई ॥ १३९ ॥

प्रहलादकी बुवा कहती है

दोहा हिरणाकुशकीवहेनही बोली बचन सुनाय
नेक दर्द कोइ मतकरो पावक देहु लगाय

भैयारे पावक देहु लगाय खड़े हो क्यों गमखाये॥ मूरखहै प्रह-
लाद समझता ना समझाये॥ भैयारे राज अंश ये नाहिं कहीं कुल
दाग लगाये॥ क्या इसकी मतिहुई नाम प्रह्लाद कहाये॥१४०

दूसरा जवाब बुवाका

दोहा सबसे मूरख येबना ऐसा बने न कोय॥
समझाया समझे नहीं बैठे कुलको खोय

भैयारे बैठे कुलको खोय रामसे ध्यान लगाये॥ जाका पिता महा-
राज तासे याने बैर लगाये॥ भैयारे देवो चिता में आग तर्स कैसा।
अबखाये॥ देखूंगी अब राम आयके इसे छुड़ाये॥१४१॥

जवाब प्रह्लाद की माताका

वोमाता प्रह्लादकी भरभर रोवै नयन
एकदिना जन्मे कुँवर को आज लगे दुखदेन

राजाजी आज लगे दुखदेन भयो दुख अगम अपारा। जादिन जन्मे कुँ-
वर खुशी भई नगर मझारा॥ राजाजी नेक दर्द नाकिया कुँवरको
नाहक मारा॥ बालकहै प्रह्लाद तेरा कुछ नाहिं बिगारा॥१४२

जवाब राजोसे रानी का

दोहा ठाट पड़े रह जांयगे अंत समय जदहोय
सदा अमर कोइ नारहै एकदिन मरना होय

राजाजी एकदिन मरना होय काम तेरे वोही आवै॥ वाबिन दूजा।
कौन तुम्हें प्रह्लाद बतावै॥ राजाजी उनहीं का करो ध्यान तेरा सब
भरम मिटावै॥ झूंठा जलधि संसार काहे कूं गोता खावै॥१४३॥

राजाका जवाब रानीसे

दोहा अहमक़ तिरिया बावली मतकरो शोच विचार

बेटातेरे चारहैं उनपर नितकरप्यार

रानीजी बेटे तेरे चार शोच मनमें ना कीजै ॥ तुम जावो रनवास खड़ी क्यों अंगपसीजै ॥ रानीजी होगये पूत कुपूत दोष हमको ना दीजै ॥ मेरी सभामें बैठिनाम उसका क्या लीजै ॥ १४४ ॥

जवाब रानीका हिरण्यकशिपुसे

दोहा यहिजीवनधिक्कारहै अबना रहा सवाद
मरूं जहर बिषखायके अगिनिहुते प्रह्लाद

राजाजी अगिनिहुते प्रह्लाद उठी मेरे तनमें ज्वाला ॥ नेक न राखो मोह मैंनें बहु दुखसे पाला ॥ राजाजी कंचन जिनकी देह नयन जैसे बने बिशाला ॥ जादिन जन्में कुँवर दिया क्यों ना देश निकाला ॥ १४५ ॥

राजाका बचन रानीसे

दोहा क्योंमरती बिषखायके हमसे करके बैर
चंदन बिरवा पालिये तो जड़से काटो कैर

रानीजी जड़से काटों कैर सींचना बिषका क्याहै ॥ बैरीहै प्रह्लाद जीवना उसका नाहै ॥ रानीजी कागज़की कर नाव नहीं कोई पार लगाई ॥ डूबेगी मँझधार कौनकी बाँह गहाई ॥ १४६ ॥

जवाब रानीका राजाजीसे

दोहा आँब फलै तौ निबचलै अराड फलै इतराय
अतिको फूलो सोहनों जड़ामूलसे जाय ॥
अपनी समझ बिचारकै बगद महलको जाय
करमरेख मिटती नहीं बैठी मन समझाय

प्रभुजी बैठी मनसमझाय करमकी रेखी न्यारी । कलम गही कर्तार टरै ना हमसे टारी ॥ प्रभुजी जिनकाले है नाम लाज उनको है भारी ॥ करिहैं आनि सहाय आपवे कृष्ण मुरारी ॥ १४७ ॥

जवाब रानीका परमेश्वर से ॥ रागसोहनी ॥

दोहा हायकरूं तो जगजले जंगलहूजलि जाय
पापी जिवड़ा ना जले जामें हाय समाय

अजी प्रहलाद शरणहै तेरी॥ तूतो करता जगकी सहाय ऐसा बली त्रैलोकीका राजा ताको बिपत अवगेरी॥ शेष महेश रटत। सनकादिक ऐसे करनेकी ढेरी॥ ब्रह्म वेद आगम नित गाँवैं जिनकी बात बड़ेरी॥ सुरनरमुनि जन ध्यान धरतहैं हम चरणन की चेरी॥ तू जगमें तोमें जगदीखे अब सुधि लीजै मेरी॥ गण गन्धर्ब नारद यश गावैं यह बिनती करहारी॥ जहं २ भीड़ पड़ी संतनपै सबकी बिपत निबेरी॥ लक्ष्मण शरण सदा चरणोंकी लीजै खबर सबेरी॥ १४८॥

प्रह्लादकी माताका बचन

दोहा जिनपै वे किरपा करैं बिगड़े सुधरैं काम
सकलसभा सुमिरण करे मुखसे बोलो राम

प्यारेजी मुखसे बोलो राम सदा वे करैं सहाई॥ संतनके प्रतिपाल दुष्टके हैं दुखदाई॥ प्यारेजी जिनके अद्भुत ख्याल लखी माया नहिं जाई॥ लिये अग्निसे राख कहां लौ करूं बड़ाई॥ १४९॥

होलीसे बचेहुए प्रह्लाद को माता देखने आई है

दोहा अगिनि पलट गई स्वर्गमें बुवा जलि भई छार
अति अनंद प्रह्लादजी राम रटें निरधार॥

प्रभुजी राम रटें निरधार अग्नि ज़रा अंग न आई॥ जाके नाम अधार सांस जग रहा तिराई॥ प्रभुजी अचरज कीसी बात रानी वहां देखन आई॥ या चरित्रको देखि सभी दुनियां हुलसाई॥ १५०॥

दोहा सुनत बचन प्रह्लादके उठी बदनमें ज्वाल
जारेसे जरते नहीं नेत्र होय गये लाल ॥

प्रभुजी नेत्र होयगये लाल धरे मनमें जब जोरा॥ तनमें ज्वाला लगी

ढूंढूंजैसे धनचोरा॥ प्रभुजी पकड़ लिये प्रह्लाद वचन तू सुनले मेरा॥ दियेखम्भसे बांध कहां अब मिंतर तोरा॥१५१॥

जवाब प्रह्लाद का राजासेहोताहै

दोहा आदि पुरुष अवतारहै सभीदेव परसंद
सो मोरी सुधि लेंयगे आन छुड़ावो फंद॥

दाऊजी आन छुड़ावो फंद नाम उनका अविनाशी॥ अजामील दि-येतार काढदी यमकी फांसी॥ दाऊजी तीनलोकके नाथ रटैं जो ल-खचौरासी॥ वे मेरी सुधिलेंय करो तुम जिनकीहांसी॥१५२॥

जवाब पिताका पुत्रसे

दोहा राक्षस कुल अवतारमें कहीं पड़ी ना चूक
लीन्योखड्ग निकासके मारकरूं दोटूक

बेटारेमारकरूं दोटूक तर्स मोकों नहिं आवै॥ दोकेकरूं दोचारज-गतमेंगति नहिं पावै॥ प्रभुजीवा मिन्तर को बोल आयके तोहि छु-ड़ावै॥ कहांगयोतेराराम बँधा उसके गुणगावै॥१५३॥

जवाब प्रह्लाद का पितासे

दोहा मोमें तोमें खड्गमें रहे खम्भमें गाज
जोमोपैकिरपा करै आय सम्हारे काज

दाऊजी आय सम्हारे काज लाजउनको है भारी॥ जिनके नाम अ-पार शेषने पृथ्वी धारी॥ दाऊजी राक्षस होगयेकोटि बड़े योधाव-लकारी॥ रतनागरमेंमथे सिन्धु जो करदियेखारी॥१५४॥

जवाब प्रह्लाद का वरुवा

आजमेरी विपता क्यों ना हरे॥ ले प्रह्लाद खम्भसे बांधे हरदम॥ हरि सुमिरे॥ संकट कठिन विपतिहै भारीनयननीर ढरे॥ मेरा॥ पिताये जन्मका वैरी मारहि मार करे॥ सूतखड्ग मेरे शिरपर ठाढ़े मेरासन देखडरे॥ करजोरे प्रह्लाद पुकारे अबतक क्यों न धरे॥ ८

आपहो प्रभु अंतरयामी यह दुख क्यों नाहरे ॥ भक्तनके प्रति पालक तुमहीं जहं२ भीड़ परे ॥ लक्ष्मण शरण मराचरणों की तुमही से काम सरे ॥ १५५ ॥ प्रहलादका वाक्य प्रभुसे

दोहा बज्रमेरो नाहीं चले सिंहगाय लई घेर
सभी ठौर रक्षाकरी अब क्यों करत देर

प्रभुजी अब क्यों करते देर टेर सुनिकरिये फेरा ॥ करीबहुत फ़रियाद राम अब काहांहै तेरा ॥ दाऊजीभक्तन पर पड़ीभीड़ जहां२ दुख निवेरा ॥ अब आवै तत्काल राम प्रभु वोहै मेरा ॥ १५६ ॥

प्रहलादका वाक्य प्रभुसे अब खम्भसे प्रकट होतेहैं

दोहा टेरकरी प्रहलादने सुनीजो त्रिभुवन भूप
भक्तहेतु धाये तुरत धरिकर नरसिंहरूप

प्रभुजीधरिकर नरसिंह रूप भयानक अतिभयकारी ॥ बड़े दंत मुख बड़ो नखन की शोभा न्यारी ॥ प्रभुजी प्रकटे खम्भमें आय गर्जना कीन्ही भारी ॥ काँपिउठे दिगपाल काँपि गई पृथ्वी सारी ॥ प्रभुजी नहिं सूरज नहिं चंद नथी रजनी अँधियारी ॥ नाभीतर नावार भये देहल मंझारी ॥ १५७ ॥ अब परमेश्वर हिरण्यकशिपुकोमारतेहैं

दोहा वेतिरलोकी नाथहैं दीन्ह्यो रूपदिखाय
सतदेखा प्रहलादका कीन्ही बड़ी सहाय

प्रभुजीकीन्हीबड़ी सहायपकड़ि हिरण्याकुश मारा ॥ कियाहाल केहाल नखनसे उदर विदारा ॥ प्रभुजी लियारवोल प्रहलाद बहुत उनको पुचकारा ॥ जनकी करीसहाय जिन्होंने नाम अधारा ॥ १५८ ॥

वाक्य प्रहलादका

दोहा हाथजोड़ि प्रहलादने चरणों शीश नवाय
अद्भुत तुम्हरो रूपहै शोभा कही नजाय

प्रभुजी शोभा कही नजाय भरोसा तेरा भारी ॥ वादिन से तोहि रटो

अग्नि राखी मांजारी ॥ तुम बिन दूजा कौन रची जिन पृथ्वी सारी ॥ दुष्टन को दल मला भक्त के हौ सुखकारी ॥ १५९ ॥

लक्ष्मीजी अस्तुति करती हैं

रूप देखि लक्ष्मी डरी भय मानैं सब देव ॥
निकट कोई ना आसकै करैं दूरिसे सेव ॥

प्रभुजी करैं दूरिसे सेव निकट कोई नहिं आवै ॥ बड़ा भयानक रूप देखिके मन घबरावै ॥ प्रभुजी लक्ष्मी जोड़े हाथ दूरसे अरज लगावै । कृपा करो महाराज रूप देखा नहिं जावै ॥ १६० ॥

परमेश्वर चतुर्भुज रूप धारे हैं

दोहा लक्ष्मीजी की अर्ज सुनि जन प्रह्लाद उबार
तुरत रूप पलटत भये भुजा दिखाई चार

प्रभुजी भुजा दिखाई चार गदा अरु पद्म बिराजै ॥ क्रीट मुकट शिर छत्र माल बैजंती साजै ॥ प्रभुजी शंख चक्र रहे धार श्याम तन अद्भुत सोहै ॥ पीताम्बर रहे ओढ़ि देखि सब का मन मोहै ॥ १६१ ॥

प्रह्लाद की बिनय प्रभु से

दोहा कनक कशिपु के उदर को ढूँढ़त हैं सब ठौर
फेर रूप धरणो पड़े भक्त ऐसा हो और

प्रभुजी भक्त ऐसा हो और बिनय प्रह्लाद ने कीनी ॥ करो पिता की मुक्ति स्वर्ग की आज्ञा दीनी ॥ पुष्पन बर्षा भई दुंदुभी देवन दीनी ॥ खुशी भये नर नारि सभी मिलि बिनती कीनी ॥ प्रभुजी राज दिये प्रह्लाद तपस्या अच्छी कीनी ॥ लक्ष्मी धर दिये हाथ उन्होंने अस्तुति कीनी १६२ ॥ दोहा अस्तुति करके देवता सब गये निज अस्थान
प्रह्लाद लीला पूरी भई हरि भये अंतरध्यान

प्रभुजी हरि भये अंतरध्यान रूप नरसिंह दिखाके ॥ सकल सभा सुन लेउ कहूं मैं लीला गाके ॥ प्रभुजी कहें लक्ष्मण कर जोड़ भुजा ॥

हरि श्रीश्रा नवाके ॥ यमकीकटिजाय त्रास बसो बैकुंठै जाके ॥१६३॥

इति प्रह्लाद चरित्रं सम्पूर्णम्

अथ बारह मासा कृष्णा गोपीका

लिख्यते

सुमेरे कृष्णाबिन नहीं चैन तड़फूं दिन रैन भये झरना ॥ सखि यद् ऋतु बारह मास पड़ा दुख भरना ॥ आया चैत मास निरास भोग बिलासन उन बिन भावै ॥ बिन कृष्णा ग्वार सब गोपी ग्वाल सुहावै ॥ बन बन में भटकत फिरैं धीर नहीं धरें सूरस बलावै ॥ दिन रैन गोपियाँ नयनन नीर बहावै ॥ बिन कृष्णा कछू नहिं भावै ॥ नहिं मथुरा हमैं सुहावै ॥ सौतिन कुबरी जलावै ॥ हुय कुब्जा के मन वहे कृष्णा देखे उसी घर धन्ना ॥ सखि यद् ऋतु बारह मास निरास हुये भरना ॥१॥ यह आया मास बैशाख भई मैं राख कृष्णा बिन जलके ॥ लेगया मेरे मनको मनमोहन छलके ॥ यूँ बिलपत गोपी ग्वाल नयन भये लाल दोऊ मलमलके ॥ जैसे तड़फत मीन हीन बिन जलके ॥ झड़ी ॥ यूँ रुदन करे ब्रज बाला ॥ किधर गये नंद के लाला ॥ सौतिन ने यह घर घाला ॥ जिन मोहा मुरली वाला ॥ हम किस विधि धीरज धरें दुख नित भरें देव का करना ॥ स० ॥२॥ यह आया मास अब ज्येष्ठ हुई नहिं भेंट कृष्णा से अजहूं ॥ बिन कृष्णा धारा सखि दयों अंखने अब तजहूं ॥ होरहा हृदय में घर बिरह तन छेद काम से जलहूं ॥ किस पै सोलह सिंगार अब हम कृष्णा सजहूं ॥ झड़ी ॥ यूँ कृष्णा कृष्णा कहें पियारी ॥ और हाहा करैं पुकारी ॥ तुम किधर गये बनवारी ॥ काहे से हमैं बिसारी ॥ यूँ रोरो कर ब्रज नारी ॥ करैं पुकार लई तब शरना ॥ स० ॥३॥ आया अषाढ़ घन घोर इन्द्र चहुं ओर घेरके बरसे ॥ बिन कृष्णा अगम सम बूंद गिरें अम्बर से ॥ कृष्णा से मेरा गात जरे यह जात हृदा अन्दर से ॥ चपला कि चमक सुख गावै दूखर उरसे ॥ झड़ी ॥ मेह बरसे बादर करके ॥ बिन कृष्णा

कलेजा धड़के ॥ आया ब्रजपे इन्दर चढ़के ॥ बर्षन लगा बढ़ बढ़
के ॥ ब्रजमें पड़रही सखि भरन ॥ भूलगये हिरण घासका चरना
॥सखि॰४॥ सावन की देखके झड़ी कृष्ण बिन कूलें ॥ जिनपी-
तम घर बसे हिंडोले झूलें ॥ हमको तीज नहीं सुहावै कृष्ण बिन
हाय उठी तनहूलें ॥ कसकत चुरियां करमें जैसे लागत शूलें ॥
झड़ी ॥ इनको हम तोड़ बगावैं ॥ आभूषण बस्त्र जलावैं ॥ ह-
मैं दादुर मोर सतावैं ॥ भरभर के घटा डरावैं ॥ मनमोहन हम
को प्राण त्याग नहिं जान ठान हँस भरना ॥ सखि॰॥५॥ भादों
की निशि अँधियारी घटा सुनकारी घिर घिर आईं ॥ बर्षन
लागा चौतरफ़ सखी बौराईं ॥ छाजो पानी पड़रहा बांध झड़
रहा अँधेरी छाई ॥ कालेपीले बादलने झड़ी लगाई ॥ ।
झड़ी ॥ मेह बरषे मूशल धारे ॥ सब सखी पड़ी मन मारे ॥ भ-
रे जलसे जंगल सारे ॥ चले उमगि नदि नाले ॥ बगुलों की दे-
ख कतार घर घर ब्रजनारि शीश धुन धरना ॥ सखि॰ ॥ ६ ॥
बिन कृष्ण कामन करी आन चढ़ाई ॥ ज्यों२ अब बर्षा पड़े ।
बिरहातन झुरे कृष्ण बिनमाई ॥ बीते पावस नहीं आये कुँ-
वर कन्हाई ॥ घर घरमें नोरते बोवैं ॥ नौ बरते दुर्गा के होवैं ॥ ह-
म बिरहिन निशदिन रोवैं ॥ बिन कृष्ण प्राण हम खोवैं ॥ पड़ी
हमैं ऐसी बिपत हमैं नहिं उचित दशहरा धरना ॥ सखि॰ ॥ ७ ॥ यह
आया कार्त्तिक मास भई निराश ग्वालिनी सारी ॥ बिन कृष्ण ।
गोपियां फिरतीं लज्जा मारी ॥ हमैं दीखत अपनी मौत यह क-
रवा चौथ परम दुखभारी ॥ होई नहिं हमसे होय बिना गिर ।
धारी ॥ झड़ी ॥ हमैं यमदीवा नहिं भावै ॥ ही दीपक माल सुहावै
॥ चौसरसे दम घबड़ावै ॥ नहिं चित्त जुवे को चावै ॥ बिष लाग
त खील खिलौनो श्याम सलोने जबसे गये घरना ॥ सखि॰ ८ ॥

यह आया मास अब अमहन देखि हिये अगिनि लगी मेरी मैया॥
जबसे न्यारे हुये हमको छोड़ कन्हैया॥ यह देख२ ऋतु शरद।
होतीहूं जरद कृष्णा बिन मैया॥ उनबिन क्योंकर होय पार ह-
मारी नैया॥ झड़ी॥ अब शीतल पवन ज़लावै॥ नितशीत क-
लेज़ा खावै॥ हमको नहिं सेज सुहावै॥ तारे गिनते निशि जा-
वै॥ सखि देख चाँदनी रात हमैं परभात कठिन हुइ करना॥
सखि॰॥ ९॥ यह पूयमास आया कांपरहि काया शीतके मारे।
शरदी से दरद होरहा बदनमें सारे॥ मेरी थरथर कांपै देह मुझे
संदेह यह अपरम पारे॥ बिन कृष्णा शीत नित हमपै ज़ुलम।
गुज़ारे॥ झड़ी॥ पोहन झड़ी लगाई॥ पड़रे पाला शीत सर[illegible]वा-
ई॥ चलरही पवन पुरवाई॥ लगा चिल्ला शरदी खाई॥ स[illegible]ब तर
बरपत झड़ भये हमें देगये कृष्णा नित झरना॥ सखि॰॥ [illegible]॥ यह।
आया मास अब माह न हो निर्वाह यह कब ऋतु भा[illegible]वै॥ बिन कृ-
ष्णा बसंती क्योंकर वस्त्र रँगावै॥ हाथों अपने [illegible]ह ना कृष्णा बि-
ना कहि नाहिं लावैं॥ बिनमोहन किसपर जा[illegible] बसंत चढ़ावैं॥ झड़ी॥
बन वनमें फूली फुलवारी॥ खिलरही बसंत की कियारी॥ होर-
हे तमासे भारी॥ देखत डोलैं नरनारी॥ सखी देख बसंती फूलगई।
सुध मूल मूल आदरना॥ सखि॰॥ ११॥ यह आया मास फाग कि
मैं निरभाग पड़ी बिल्लाती॥ रंग देख देख जिया उमंगती छाती॥
यह पटोलक मृदंग राग औररंग। जिधर सुनपाती॥ सुन सुनके
भाड़में निशदिन सुन सुन [illegible]ाती॥ झड़ी॥ सखि हिलमिल मता
उपावैं॥ योगी स्वाँग [illegible]नावैं॥ तन भूषण भस्म रमावैं॥ गलै सीं-
गा नाद बजावैं॥ यह कुलकी हमारी रस्म जीतेजी खस्म रहीं।
कुछ दरना॥ सखि षट् ऋतु बारह मास पड़ा दुख भरना॥ १२॥
गोपियों को प्रेम पहिचान आप भगवान् लौंद में आये। सब।

हँसहँस गोपीग्वाल कराठ लगाये ॥ यह देख देख सुर वृन्द हुये ॥ आनंद पुष्प बरसाये ॥ मंगल में बाजे बजे सकल हुलसाये ॥ झड़ी ॥ कहें गुरुदत्त ज्ञानी ॥ सुनों लज्जासिंह की बानी ॥ गाँवैं इश्वरीसिंह सैलानी ॥ सुन सुनके भागे दहकानी ॥ कलगीं तुर्रे को तजो कृष्णानित भजो जो चाहो तरना ॥ सखि घट ऋतु बारह मास त्रास हुये भरना ॥ १३ ॥

इति बारह मासा कृष्ण गोपियों का सम्पूर्ण





